द्वितीय अध्याय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय–2

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 भूमिका–

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक अनुसंधान की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण कदम है, चाहे वह किसी भी क्षेत्र का हो। शोध कार्य के अन्तर्गत साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रारंभिक अनिवार्य प्रक्रिया है, क्योंकि यह व्याख्या की जाने वाली समस्या की पूरी तत्वीर प्रकट करता है। संबंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से संबंधित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषो, पत्र पत्रिकाओं प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से पूर्व में किये गये अनुसंधानों के अध्ययन से अन्य नवीन समस्याओं का पता चलता है। संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता को अध्ययन के लिये उचित दिशा निर्देश नहीं मिल पाते है। जब तक उसे ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस विधि से कार्य किया गया है तब तक वह न हो तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही इस दिशा में सफल हो सकता है।

वस्तुतः साहित्य का पुनरावलोकन पूर्व अध्ययनों की सीमाएं और महत्वपूर्ण चीजों के संदर्भ में अतः दृष्टि प्रदान करता है। यह उसको अपने शोध में सुधार के योग्य बनाता है।

प्रस्तुत शोध शीर्षक से पूर्व साहित्य प्रत्यक्ष रूप से संबंधित नहीं पाया गया फिर भी निम्नलिखित साहित्य अप्रत्यक्ष रूप से शोध से संबंधित है।

2.2 संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से लाभ–

1. जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधान कर्ता द्वारा किया जा चुका है। वह पुनः किया जा सकता है।
2. वह व्याख्या की जाने वाली समस्या की पूरी तस्वीर प्रकट करता है।

3. ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिये यह आवश्यक है कि अनुसंधान कर्ता को यह ज्ञात हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहा तक है। वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात ही ज्ञान को आगे बढ़ाया जा सकता है।
4. समस्या से संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है।
5. सत्यापन करने के लिये कुछ अनुसंधानों को नवीन दिशाओं में करने की आवश्यकता होती है।
6. किसी अनुसंधानकर्ता के द्वारा पूरा वही अनुसंधान कार्य भली प्रकार किया जा चुका है तो हमारे प्रयास को सार्थकता प्रदान करता है।
7. इससे अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अनादृष्टि प्राप्त होती है।

2.3 पूर्व शोध आकलन

1. राव (1967) ने "समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध का अध्ययन" किया। उन्होंने पाया कि निम्न उपलब्धि प्राप्त करने वाले व्यक्तियों की समायोजन संबंधित समस्याएँ अधिक होती है।
2. खान (1969) ने "विद्यार्थियों की अभिवृत्ति, शिक्षा पद्धति, समायोजन की आवश्यकता, उपलब्धि की चिंताओं का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन" किया। अपने अध्ययन में खान ने पाया कि उपरोक्त कारकों का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव प्राप्त हुआ तथा उपरोक्त सभी कारकों में बालिकाओं का उपलब्धि स्तर तथा अभिवृत्ति बालकों की अपेक्षा उच्च्य प्राप्त हुई।
3. श्रीवास्तव (1975) ने "इण्टरमीडिएट और स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और समायोजन के मध्य संबंध का अध्ययन" किया। श्रीवास्तव ने अपने अध्ययन में पाया कि इन्टरमीडिएट और स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों में उच्च्य समायोजन, उच्च्य शैक्षिक उपलब्धि में सहायक है।
4. हरलॉक (1975) "कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों का विद्यालयीन वातावरण, का विद्यार्थियों के समायोजन तथा इनकी उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन"

किया। हरलॉक के अध्ययन के अनुसार यदि स्कूल का वातावरण आवश्यकताओं की पूर्ति होने वाला हो तो छात्रों का समायोजन अच्छा रहता है, और उनकी उपलब्धि भी आवश्यकताओं की पूर्ति न होने वाले स्कूलीय वातावरण की अपेक्षा ज्यादा होती है।

5. जैन (1996) ने "प्राथमिक स्तर पर आदिवासी तथा गैर आदिवासी क्षेत्र के विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन" किया। जैन के अनुसार उपलब्धि परीक्षण में बालकों की अपेक्षा बालिकाओं ने अधिक अंक प्राप्त किये। आदिवासी क्षेत्र के विद्यार्थियों की उपलब्धि गैर आदिवासी विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च प्राप्त हुई।

6. मुखोपाध्याय (1991) ने "रूचि, आत्मसंप्रत्यय, समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि के संबंध में विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन" किया। उन्होंने अध्ययन में पाया कि अधिक उच्च शैक्षिक उपलब्धि रखने वाले विद्यार्थियों में विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति उच्च पायी गयी तथा उनके अध्ययन में अधिक रुचि तथा अधिक समायोजन पाया गया। ऐसे विद्यार्थियों का उच्च आत्म संप्रत्यय पाया गया।

7. **Biju Abraham, Sam santada Raj (2013), in Golden research thoughts volume- II "Attitude of students towards academic work"**

The Finding revealed that, there was significant, difference between the male and female students in their attitude towards academic work, there was no significant difference between the students who were studies in English medium and Malayalam medium school.

8. **Marie Jean N. Mendezabal (2013), conducted a study on "Study habits and attitudes : The road to academic success"**

A Significant correlation between students study habits and attitudes and their performance in licensure examination was clearly shown in the present study. Thus, to enhance the quality of education, there is a need to improve the study habits and attitudes of the students.

9. **Hirunval (1930), "Studied the classroom climate and academic performance"**

The finding reveled that boy's were academically motivated then girls, pupils in rular areas were more academically motivated than those in the urban areas. The self concept of pupils and their class room climate showed positive relationship. Self concept and academic performance of pupils and pupils academic performance and classroom climate were positively related.

10. **Ray (1990), "A study of student attitude towards studies and health as related to their scholastic achievement"** And found that the scholastic achievement was high if students have positive attitude towards studies.